Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

Original Article

जातिवादी जंजीर तोड़ने वाली सांभरिया की कहानी: फुलवा

डॉ. भाविनकुमार अंबालाल वणकर
सहायक प्राध्यापक, नवगुजरात आर्ट्स एंड कोमर्स कोलेज, बालासिनोर, (गुजरात)
Email: bhavinvankar2016@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180504
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 5(A)
Pp. 10-12
May- 2026
Submitted: 15 Apr. 2026
Revised: 25 Apr. 2026
Accepted: 10 May. 2026
Published: 31 May 2026

प्रस्तावना:

आर्यों के बारे में यह माना जाता है कि वे मध्य एशिया से सप्त-सिंधु क्षेत्र में आए। यहाँ आकर उनका स्थानीय निवासियों (द्रविड़ों) के साथ संघर्ष हुआ, जिसमें उन्होंने अपना वर्चस्व स्थापित किया। समाज में अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए चातुर्वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया गया, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण निर्धारित किए गए। इस व्यवस्था में शूद्रों को निम्नतम स्थान दिया गया तथा उन्हें अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना उनका कर्तव्य माना गया। इस व्यवस्था के अंतर्गत शूद्रों के लिए सामाजिक उन्नति के अवसर सीमित कर दिए गए और वर्ण व्यवस्था को कर्म तथा पुनर्जन्म से जोड़कर स्थायी रूप देने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में 'मनुस्मृति' जैसे ग्रंथों की रचना का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने सामाजिक संरचना को और सुदृढ़ किया। कालांतर में इस व्यवस्था के विरोध में अनेक संतों और महापुरुषों ने आवाज़ उठाई। गौतम बुद्ध ने समानता और करुणा का संदेश दिया। निर्गुण भक्ति धारा के संत कबीर और रैदास ने जाति-पाँति का विरोध किया। आधुनिक काल में ज्योतिबा फुले ने शिक्षा के माध्यम से वंचित वर्गों और महिलाओं के लिए नए अवसर खोले, जबकि ई. वी. रामासामी पेरियार ने जाति व्यवस्था को मानव-निर्मित बताया।

आगे चलकर डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा और सामाजिक आंदोलन के माध्यम से इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ, जिसने सभी नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय के मूल अधिकार प्रदान किए। कांशीराम ने दलित समाज में राजनीतिक चेतना का विकास किया। आज शिक्षा, रोजगार और राजनीति में आरक्षण जैसी नीतियों के माध्यम से सामाजिक समानता स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। बहुजन महापुरुषों के त्याग और संघर्ष के परिणामस्वरूप दलित वर्ग में शिक्षा का प्रसार हुआ है और वे विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहे हैं।

फुलवा :

रत्नकुमार सांभरिया दलित चेतना के प्रमुख कहानीकार हैं। 'फुलवा' उनकी प्रथम कहानी मानी जाती है, जो दलितों में शिक्षा की चेतना जगाने वाली महत्वपूर्ण कहानी है। कहानी की शुरुआत वर्षा के वातावरण से होती है, जहाँ आकाश में बादल मंडरा रहे हैं और वर्षा होने की संभावना है। गाँव का निवासी रामेश्वर शहर आकर असमंजस की स्थिति में पड़ जाता है। वह पंडित माता प्रसाद का मकान खोज रहा है, किन्तु उसे सही पता नहीं मिल पाता। वह जिस व्यक्ति को पर्ची दिखाता है, वह उससे प्लॉट नंबर पूछता है, जो उसे ज्ञात नहीं है। इसी बीच यह भी संकेत मिलता है कि फुलवा उसी कॉलोनी में रहती है और उसके पुत्र का पूरा पता रामेश्वर के पास लिखा हुआ है। रामेश्वर एक स्कूटर चालक को पता दिखाता है। स्कूटर चालक उसे बताता है कि उसे राधा मोहन साहब के घर जाना है और वह उसे वहाँ छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है, क्योंकि वर्षा होने वाली है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. भाविनकुमार अंबालाल वणकर सहायक प्राध्यापक, नवगुजरात आर्ट्स एंड कोमर्स कोलेज, बालासिनोर, (गुजरात)

How to cite this article:
वणकर, भाविनकुमार. अंबालाल. (2026). जातिवादी जंजीर तोड़ने वाली सांभरिया की कहानी: फुलवा. Journal of research & development, 18(5(A)), 10–12. https://doi.org/10.5281/zenodo.20841928

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20841928
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

रामेश्वर मन ही मन सोचता है कि पंडित के पुत्र को कोई नहीं जानता, जबकि फुलवा के बेटे को अधिक लोग जानते हैं। स्कूटर चालक उसे एक आलीशान कोठी के सामने उतार देता है। रामेश्वर गेट पर हॉर्न बजाता है। फुलवा गेट खोलती है और रामेश्वर को पहचान लेती है। वह उसे आदरपूर्वक अंदर बुलाती है और प्रसन्न होती है कि जमींदार का बेटा उसके घर आया है।

फुलवा का पति जमींदार के घर टहलवाई का कार्य करता था। एक दिन वह जमींदार के बिगड़ैल बैल को काबू करने का प्रयास कर रहा था। नाकल ढीली पड़ते ही गुस्साए बैल ने उसके पेट में सींग मार दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और तड़पकर उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद फुलवा विधवा हो गई। उस समय उसका पुत्र राधा मोहन मात्र दस वर्ष का था।

पति की मृत्यु के पश्चात टहलवाई का कार्य फुलवा को मिल गया। वह जमींदार के घर घास काटती, पानी भरती तथा पशुओं की देखभाल करती थी। उसने कठोर परिश्रम करते हुए अपने पुत्र को शिक्षित किया। इसी शिक्षा की बदौलत उसका जीवन परिवर्तित हुआ और वह गाँव की झोपड़ी से शहर की हवेली तक पहुँच गई।

जब फुलवा ने रामेश्वर को अपने घर बुलाकर सोफे पर बैठाया, तब प्रारंभ में रामेश्वर को यह भ्रम था कि वह किसी किराएदार के यहाँ आया है। किंतु थोड़ी ही देर में उसका भ्रम दूर हो गया और उसे ज्ञात हुआ कि फुलवा स्वयं उस कोठी की मालकिन है।

फुलवा रामेश्वर को अपनी हवेली के विभिन्न कमरे दिखाती है। हवेली की आलीशान वस्तुओं को देखकर रामेश्वर के मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है, क्योंकि ऐसी सुविधाएँ गाँव के जमींदारों, बनियों और ब्राह्मणों के घरों में भी दुर्लभ थीं। फुलवा उसे डाइनिंग टेबल दिखाते हुए कहती है, 'रामेश्वर जी, हम सब शाम को यहीं बैठकर भोजन करते हैं|' यह सुनकर रामेश्वर को असहजता अनुभव होती है, क्योंकि उसके यहाँ मेहमानों के लिए चटाई बिछाई जाती है।

फुलवा उसे ठंडा पानी रखने के लिए फ्रिज तथा फलों का रस निकालने के लिए जूसर भी दिखाती है। इसके बाद वह उसे रसोई में ले जाती है। रसोई में रखे कीमती बर्तन और गैस देखकर रामेश्वर आश्चर्यचकित रह जाता है। फुलवा नल की ओर संकेत करते हुए कहती है, 'हमारे यहाँ चौबीसों घंटे पानी आता है|'

यह देखकर रामेश्वर को सत्रह वर्ष पूर्व की घटना याद आती है, जब फुलवा की जाति के लोगों को जमींदार के कुएँ से पानी लेने की अनुमति नहीं थी। फुलवा को आधा कोस दूर स्थित कुएँ से पानी लाना पड़ता था। एक दिन जब रामेश्वर कुएँ पर स्नान कर रहा था, तब फुलवा मटका लेकर खड़ी थी और उसने हाथ जोड़कर उससे दो बाल्टी पानी देने का अनुरोध किया। किंतु रामेश्वर को उसका बार-बार नाम लेना बुरा लगा और उसने क्रोध में आकर उसके मटके में थूक दिया। इस अपमान से आहत होकर फुलवा ने आत्मसम्मान के साथ वहीं मटका तोड़ दिया और लौट गई।

वर्तमान में, जब रामेश्वर फुलवा की रसोई देखता है, तो उसे यह अनुभव होता है कि समय के साथ परिस्थितियाँ बदल जाती हैं- "समय सौदागर है| रामेश्वर आज भी उसी कुआं से पानी भरता है| फुलवा के रसोई में भी नल हैं|"(1) अब जहाँ रामेश्वर उसी पुराने कुएँ से पानी भरता है, वहीं फुलवा के घर में आधुनिक जल-सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

इस प्रकार, दलितों के जीवन में आया यह परिवर्तन महापुरुषों के संघर्ष और शिक्षा के प्रसार का परिणाम है। वास्तव में, शिक्षा ही वह माध्यम है जिसने दलित समाज के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाया है।

रामेश्वर को साथ लेकर फुलवा एक कमरे में गई। वहाँ उसके पोते और पोती पढ़ रहे थे। उन्होंने नमस्कार किया और पुनः पढ़ाई में जुट गए। लेखक ने यहाँ शिक्षा के महत्व को भी दर्शाया है।

फुलवा उसे अपने बड़े कमरे में ले आई। कमरे में दो पंखे और एक कूलर लगा हुआ था। कूलर चालू करते हुए वह बोली, "मैं तो इसे कभी-कभार ही चलाती हूँ, इससे शरीर चिपचिपा हो जाता है।" फुलवा की बात सुनकर रामेश्वर क्रोधित होकर बोला, "फुलवा की बच्ची खेत में लेटकर नींद निकाल लेती थी, और आज कूलर से शरीर चिपचिपाता है!"

फुलवा रामेश्वर को हवेली की अनेक चीजें दिखाती है और फिर उसे छत पर ले जाती है। छत देखकर वह अपने अतीत को याद करती है- "बरसात के दिनों में एक दिन झंझा (तूफान) आ गया था| फुलवा की झुंपड़ी उड़-बिखर गई थी| तब झुपड़ी को पुन: खड़ी करने के लिए उसने ही पचास पूले गिनकर उसे दिए थे कि छान संवरवा लेगी|"(2)

दुःखों के कारण फुलवा के शरीर पर फफोले पड़ जाते थे। समय के साथ परिस्थितियाँ बदल गईं और आज वह हवेली की मालकिन है।

फुलवा उसे बैठक कक्ष में ले गई। रामेश्वर जैसे ही सोफे पर बैठा, वह लगभग छह इंच नीचे धँस गया। हवेली की ठाट-बाट देखकर वह अचंभित रह गया। सोफे पर बैठे-बैठे उसने बीड़ी जलाई और तीली कालीन पर ही फेंक दी। उसने ईर्ष्यावश ऐसा किया, परंतु फुलवा ने उसे उठाकर ऐश-ट्रे में डाल दिया।

सोफे पर बैठा रामेश्वर सोचता है- "फुलवा चालक निकली| इसने सौ पापड़ बेल लिए लेकिन राधा मोहन के हाथ से किताब नहीं छूटने दी, वरना उसकी हथेली तले हमारा हल होता आज"(3) यहाँ स्पष्ट होता है कि दलित समाज ने शिक्षा के महत्व को समझा है। वे कठिन परिश्रम करते हुए भी अपने बच्चों को पढ़ाते हैं। फुलवा ने जमींदार के यहाँ मजदूरी करके अपने बेटे राधा मोहन को पढ़ाया, जो आगे चलकर एस.पी. बन गया।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

फुलवा पहले जमींदार के यहाँ नौकरानी का काम करती थी, लेकिन आज उसकी अपनी हवेली है और उसके घर में भी एक नौकरानी काम करती है। वह अब सभी सुख-सुविधाओं से संपन्न हो गई है। शिक्षा के माध्यम से दलित समाज में यह परिवर्तन आया है।

फुलवा ने कुंवर को कॉफी बनाने के लिए कहा। रामेश्वर ने कुंवर को देखकर पूछा, 'क्या यह तुम्हारी बहू है?' तब फुलवा ने बताया, 'नहीं, यह मेरी नौकरानी है। इसका नाम कुंवर है। मैंने आज तक इससे उसकी जात नहीं पूछी। यह खुद कहती है कि वह राजपूत है। गाँव में छत्तीस जातियाँ होती हैं, लेकिन शहर में केवल दो ही जातियाँ होती हैं- अमीर और गरीब।'

एक दिन वह गेट के सामने रोती हुई आई थी और बोली, 'अम्मा जी, मैं दुखियारी हूँ। भीख नहीं माँगूँगी, मुझे नौकरानी रख लीजिए।' यह सुनकर रामेश्वर ने खेद व्यक्त किया, 'इतनी बड़ी जाति की स्त्री, फुलवा जैसी छोटी जाति के घर नौकरानी!'

कुंवर कॉफी के साथ नाश्ता भी लेकर आई। फुलवा ने पंडित जी को खाने के लिए कहा, परंतु उन्होंने न तो कॉफी पी और न ही नाश्ता किया, क्योंकि उनका धर्म आड़े आ रहा था। उन्होंने बहाना बनाया कि कल दाढ़ निकलवाई है, इसलिए दर्द हो रहा है।

रामेश्वर के कहने पर फुलवा पंडित माता प्रसाद के घर गई। पंडित माता प्रसाद की विधवा पत्नी परती और फुलवा के बीच गाँव में भले ही दूरी थी, क्योंकि परती छुआछूत मानती थी, लेकिन शहर में आकर दोनों एक हो गईं।

पद और धन के आगे जाति का भेद कमज़ोर पड़ जाता है। जब दलित आर्थिक रूप से ऊपर उठते हैं, तो छुआछूत की भावना टूटती हुई दिखाई देती है। परती और फुलवा को एक ही खाट पर बैठा देखकर रामेश्वर ईर्ष्या से भर उठता है। दोनों कुछ देर बातचीत करती हैं, और फिर फुलवा अपने घर लौट आती है।

पंडिताइन रामेश्वर से पूछती है, "किसी काम से आए हो?" तब रामेश्वर बताता है, 'दादी, सौ बीघा जमीन मेरे बाप के नाम थी, जो पाँच भाइयों में बँट गई। अब मैं जमींदार नहीं रहा। मेरा एक पोता है- दीपसिंह। उसने पाँच साल पहले मैट्रिक पास कर ली है। उसे कहीं नौकरी लगवा दीजिए।'

पंडिताइन उससे कहती है, 'क्या तू फुलवंती की कोठी पर गया था?' तब वह जात्याभिमानी अहंकार में कहता है, "दादी फुलवा सोने की हो जाए, रहेगी उसी जात की। मैंने तो उसके घर का पानी तक नहीं पिया। धर्म भ्रष्ट होने से मर जाना अच्छा समझता है, रामेश्वर सिंह।"(4) पंडिताइन उसे डाटा, "तू तो कुएं का मेढक ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जांत-पांत का नहीं। फुलवंती का राधा मोहन कोई छोटा-मोटा अफसर नहीं है। एस.पी. है, एस.पी.। एक बात बताऊं तुझे। जाकर मेम साब के पांव पकड़ ले और तब तक मत छोड़, वह हां न कह दे। चरण छूऊं बहुरानी के। मेरे बेटे को तो उसी ने दूसरी जिंदगी दी हैं।"(5) दलित समाज शिक्षा के बलबूते इतना आगे निकल गया है कि सवर्ण लोगों को भी सिफारिश के लिए उनके पास जाना पड़ता है। यह बात जात्याभिमानी लोगों को बहुत खटकती है, किन्तु परिवर्तन प्रकृति का सत्य है और उसके साथ जीना आवश्यक है।

निष्कर्ष:-

दलित समुदाय कड़ी मेहनत और मजदूरी करके अपने बच्चों को पढ़ाता है। शिक्षा ही वह आयुध है, जिसके माध्यम से जातिवाद की जंजीरों को ध्वस्त किया जा सकता है। फुलवा ने जमींदार के यहाँ संघर्ष करते हुए अपने बेटे को पढ़ाया। उसका बेटा पढ़-लिखकर जाति-व्यवस्था की बेड़ियाँ तोड़ते हुए एस.पी. बन जाता है।

इस प्रकार लेखक ने 'फुलवा' कहानी में शिक्षा के माध्यम से युग परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्शाया है। वास्तव में, शिक्षा के माध्यम से समाज और युग दोनों को बदला जा सकता है।

दलित समाज ने बाबासाहब के 'शिक्षित बनो' सिद्धांत को काफी हद तक साकार किया है, किन्तु वह केवल अपने और अपने परिवार तक ही सीमित रह गया है। 'संगठित रहो' और 'संघर्ष करो' जैसे सिद्धांतों के पालन में दलित समाज आज भी कुछ हद तक पिछड़ा हुआ दिखाई देता है।

सन्दर्भ-सूची

1. रत्नकुमार सांभरिया, दलित समाज की कहानीयां, कहानी-'फूलवा', अनामिका पब्लिशर् एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. - नई दिल्ली, दूसरा संस्करण- 2017, पृ., सं. 20
2. वही, पृ., सं.- 21
3. वही, पृ., सं.- 23
4. वही, पृ., सं.- 27
5. वही, पृ., सं.- 27